~~[illegible]~~

स्नातक (द्वितीय वर्ष)
मैथिली

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता) जी
मैथिली विभाग
r.s.j. college, Rajnagar
madhubani (Bihar)

Topic: "रचना शीर्षक कथाक वैशिष्ट्य"

रचना कथाक कथाकार छथि मनमोहन झा। रचना एक ग्रामीण बाला कथाक नायिका स्वयं रचना छथि। रचनाक विवाह १३ वर्षक अवस्थामे भऽ गेलनि। ओहि अबोध बालासँ पति चन्द्रशेखर झा एक राति अपन मंतव्य प्रकट करैत कहलाह - सुनैत छियैक जे मैरवमे बड़ लोक लड़ाइमे भर्ती होइत छैक, अहाँ अपन बेसाहि दितहुँ त बन्हकी राखि हम कोनहुना चल जइतहुँ। फेर जखन कमैआ कमा क' अनितहुँ त बन्हक छोड़ा लेब। रचना हमरा गहनाक मोह त नहि छल मुदा ई जे लड़ाइमे जयबाक त' सुनै छियै जे लोक बाँचि कें अबैत नहि छैक। तेँ हमे लाथ क' कहलियै जे ई त हमर नैहरक देल छिक/ हम ककरहु किएक देबैक? एहि घटनाक तीन-चारि दिनक बाद बिना ककरहु किछु कहने गामसँ निपत्ता भ' गेलाह। ओकर बाद सेनामे भर्ती हवलदार कैं मुँहे हुनक समाचार भेटैत छन्हि। हवलदार

(2)

साहेबक छुट्टी बीतलाक बाद पुनः मनीपुर जयबाक
काल हुनका दुरखा सँ भेंट करबा लेल अयलाह।
भाइ आब आयब त' एकसरे नहि आयब।
हमरा त' आश्चर्य लगैत अछि जे पुरुष सब केना
लोकवेदकेँ छोड़िकेँ बिसरि जाइत छथि। हम से त नहि
हम पुरुषार्थी छियनि। हृदय त' ओकरो होइ छै। छाती
पर पाथर राखिकेँ लोकक स्वजनसँ फराक रहैत अछि।
हवलदार साहेब जखन छुट्टीक बाद मनीपुर पोस्ट
पर पहुँचला त' चन्द्रशेखर झा सँ भेंट भेलनि। सभ
कुशलात आदान-प्रदान केँ बाद ओ चन्द्रशेखर
झा केँ कहा लेलनि जे आब गाम जायब त' ओ
सँगे चलताह। छ-सात मासक बाद गामसँ तार
भेलनि जे माय बड़ दुःखित छथि। जल्दी आउ।
यथाशीघ्र लड़ाइ मे छुट्टी भेंटि गेलनि। हवलदार आब
चन्द्रशेखर झा के खोज करलनि ई एकावरक गाम जाइत
छलाह। गाम जाइते हुनका खबरि त की डसबनि ले जयबा
सँ पहिने दुश्मनसँ भेंट करब आवश्यक छलनि। लड़ाइ केँ
मे हुनक कैप्टन शुभमेहता सीमे चारि तोगात छलैक-
मिलिट्री छल - (नायक) न-188 रानी डेढ़बजे पर भरि गेलाह।
हुनका केँ पति सहीद भए जायत छथिन्ह। हुनका राष्ट्रक
कल्याण मे आहुति देनिहार पतिक बलिदान सँ सम्मानित
त' अवश्य होयत छथि मुदा पतिक वीरता ओ राष्ट्रक लेल
अर्पित अपन पतिक कीर्तिसँ गौरवान्वित सेहो होइत छथि।

Sanjay Kumar